हिन्दुस्तान
कानपुर • शनिवार • 10 जुलाई 2021

सीएसए में मधुमक्खी संवर्धन का काम शुरू

कानपुर। सीएस में मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण और संवर्धन परियोजना का शुभारंभ हुआ। एक वर्चुअल सेमिनार भी हुआ। अध्यक्षता विवि के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने की। मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के कृषि एवं उद्यान आयुक्त डॉ. एसके मल्होत्रा रहे।

1@gmail.com, vidhankesarinews@gmail.com
www

हिन्दी दैनिक

विधान केसरी

...खबर सिर्फ जनहित के लिए

लखनऊ संस्करण, शनिवार 10 जुलाई 2021 (वर्ष-3 अंक 19), मूल्य-2.00 रुपये पृष्ठ-16

वीरहरण की यह घटना लोकतंत्र...
केटीएस तुलसी ने पीएम मोदी...
दिलों में हमेशा जिंदा

मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण व संवर्धन परियोजना पर एक दिवसीय सेमिनार का शुभारंभ

कानपुर (विधान केसरी)। मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन परियोजना के शुभारंभ अवसर पर एक दिवसीय वर्चुअल सेमिनार का आयोजन किया गया। इस वर्चुअल सेमिनार की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह ने की जबकि भारत सरकार के कृषि एवं उद्यान आयुक्त डॉ एसके मल्होत्रा बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिससे किसानों की आमदनी में बढ़ोतरी होगी।

उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि देश में लगभग 1.25 लाख मैट्रिक टन शहद का उत्पादन किया जा रहा है। जबकि 67 हजार 500 मीट्रिक टन शहद का निर्यात किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड भारत सरकार द्वारा देश के 17 केंद्रों पर मधुमक्खी पालन परियोजना संचालित है। जबकि मधुमक्खी की गुणवत्ता परखने हेतु 100 मिनी परीक्षण प्रयोगशाला भी सुचारू रूप से चल रही हैं। डॉक्टर मल्होत्रा ने छात्र-छात्राओं को सुझाव दिए कि मधुमक्खी पालन पर शोध करें। जिससे शहद का उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी हो। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह ने कहा कि मध्य उत्तर प्रदेश में सरसों की खेती बड़े स्तर पर होती है। मधुमक्खी पालन व सरसों का समावेश होगा तो अवश्य ही सरसों के उत्पादन और शहद के उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। उन्होंने कहा कि शोध द्वारा पाया गया है कि मधुमक्खी के परागण क्रिया द्वारा सरसों में कि 43 प्रतिशत उत्पादन अधिक हुआ है। डॉ सिंह ने कहा कि छात्र मधुमक्खी पालन पर शोध करेंगे तो अवश्य अपना उद्यम स्थापित कर करेंगे। साथ ही परियोजना के माध्यम से मधुमक्खी पालकों को जागरूक किया जाएगा। इसके अतिरिक्त छात्रों से कहां की जैविक कीट नियंत्रण के लिए मित्र कीटों पर भी शोध करने की आवश्यकता है। तत्पश्चात कार्यक्रम के अंत में मधुमक्खियों को आकर्षित करने वाले पौधे जैसे जामुन, यूकेलिप्टस का माननीय कुलपति महोदय द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। कार्यक्रम में सभी अतिथियों का स्वागत कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ वाई पी मलिक ने किया जबकि कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद डॉ राम सिंह उमराव ने दिया। इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉक्टर धर्मराज सिंह, निदेशक शोध डॉक्टर एच जी प्रकाश सहित अन्य संकाय सदस्य एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

कानपुर, 10 जुलाई, 2021 दैनिक जागरण 7

मधुमक्खी पालन से फसलों का बढ़ेगा उत्पादन

जासं, कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ मधुमक्खी पालन से फसलों का उत्पादन बढ़ाने की तकनीक विकसित करेंगे। उन्हें राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड की ओर से 9.6 लाख रुपये का प्रोजेक्ट मिला है। इसमें विशेषज्ञ न सिर्फ मधुमक्खी के परागण की क्रिया को देखेंगे, बल्कि शहद की गुणवत्ता का आकलन कर सकेंगे। प्रोजेक्ट के अंतर्गत किसानों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मीडिया प्रभारी डा. खलील खान ने बताया कि मधुमक्खी पालन से शहद का व्यवसाय हो रहा है। कई किसान इसमें अच्छा काम कर रहे हैं। इससे फसलों के परागण की प्रक्रिया होती है, जिससे उनमें फूल बेहतर गुणवत्ता वाले निकलते हैं। विश्वविद्यालय परिसर में जामुन और यूकेलिप्टस के पेड़ लगाए गए हैं। इनमें मार्च से जून में फूल आने शुरू हो जाते हैं। उधर, विवि में मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन परियोजना पर आनलाइन सेमिनार हुआ। अध्यक्षता कुलपति डा. डीआर सिंह ने की, जबकि कृषि एवं उद्यान आयुक्त डा. एसके मल्होत्रा बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे।

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, शनिवार, 10 जुलाई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 265, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण व सेमिनार आयोजित

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में शुक्रवार को कुलपति प्रोफेसर डीआर सिंह की अध्यक्षता में मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन परियोजना के शुभारंभ अवसर पर एक दिवसीय वर्चुअल सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे भारत सरकार के कृषि एवं उद्यान आयक्त डॉ. एस.के.मल्होत्रा ने कहा कि मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिससे किसानों की आमदनी में बढ़ोत्तरी होगी। देश में लगभग 1.25 लाख मैट्रिक टन शहद का उत्पादन किया जा रहा है। जबकि 67 हजार 500 मीट्रिक टन शहद का निर्यात किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड भारत सरकार द्वारा देश के 17 केंद्रों पर मधुमक्खी पालन परियोजना संचालित है जबकि मधुमक्खी की गुणवत्ता परखने के लिए 100 मिनी परीक्षण प्रयोगशाला भी सुचारू रूप से चल रही हैं। उन्होंने छात्र-छात्राओं को मधुमक्खी पालन पर शोध करने के लिए कहा जिससे शहद का उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोत्तरी हो सके।

इस अवसर पर कुलपति डॉ.डी.आर. सिंह ने कहा कि सरसों की खेती मध्य उत्तर प्रदेश में बड़े स्तर पर होती है। मधुमक्खी पालन व सरसों के समावेश से सरसों के और शहद के उत्पादन में वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि परियोजना के माध्यम से मधुमक्खी पालकों को जागरूक किया जाएगा। इसके साथ ही छात्र मधुमक्खी पालन कर शोध करें तो अवश्य अपना उद्यम स्थापित कर लेंगे।कार्यक्रम के अंत में कुलपति द्वारा मधुमक्खियों को आकर्षित करने वाले पौधे जामुन, यूकेलिप्टस का वृक्षारोपण भी किया गया।

कार्यक्रम में सभी अतिथियों का स्वागत कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वाई. पी. मलिक ने किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धर्मराज सिंह, निदेशक शोध डॉ. एच. जी. प्रकाश सहित अन्य संकाय सदस्य एवं छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

आज
कानपुर 10 जून 2021 5

मधुमक्खियों के पालन पर शोध करें विद्यार्थी बढ़ेगा शहद का उत्पादन-उत्पादकता

पौध रोपण करते कुलपति डा. डीआर सिंह व अन्य।

कानपुर, 9 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में आज मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन परियोजना के शुभारंभ के अवसर पर एक दिवसीय वर्चुअल सेमिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि कृषि उद्यान आयुक्त डा. एस. के. मल्होत्रा ने कहा कि मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिससे किसानों की आमदनी में बढ़ोतरी होती है। देश में लगभग 1.25 लाख मैट्रिक टन शहद का उत्पादन किया जा रहा है, जबकि 67 हजार 500 मीट्रिक टन शहद का निर्यात किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड भारत सरकार द्वारा देश के 17 केंद्रों पर मधुमक्खी पालन परियोजना संचालित है, जबकि मधुमक्खी की गुणवत्ता परखने हेतु 100 मिनी परीक्षण प्रयोगशाला भी सुचारू रूप से चल रही हैं। डॉ मल्होत्रा ने छात्र-छात्राओं को सुझाव दिए कि मधुमक्खी पालन पर शोध करें। जिससे शहद का उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी हो। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति डॉ डी.आर. सिंह ने कहा कि मध्य उत्तर प्रदेश में सरसों की खेती बड़े स्तर पर होती है। मधुमक्खी पालन व सरसों का समावेश होगा तो अवश्य ही

मधुमक्खियों के अनुकूल पौधरोपण एवं संवर्धन परियोजना का शुभारंभ

सरसों के उत्पादन और शहद के उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। उन्होंने कहा कि शोध द्वारा पाया गया है कि मधुमक्खी के परागण क्रिया द्वारा सरसों में कि 43 प्रतिशत उत्पादन अधिक हुआ है। डॉ सिंह ने कहा कि छात्र मधुमक्खी पालन पर शोध करेंगे तो अवश्य अपना उद्यम स्थापित कर करेंगे। साथ ही परियोजना के माध्यम से मधुमक्खी पालकों को जागरूक किया जाएगा। इसके अतिरिक्त छात्रों से कहां की जैविक कीट नियंत्रण के लिए मित्र कीटों पर भी शोध करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के अंत में मधुमक्खियों को आकर्षित करने वाले पौधे जैसे जामुन, यूकेलिप्टस का कुलपति द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। इस दौरान कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ वाई पी मलिक, डा. राम सिंह उमराव, अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धर्मराज सिंह, निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश सहित छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

सी.एस.ए. विश्वविद्यालय मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन परियोजना का हुआ शुभारंभ

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में शुक्रवार को मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन परियोजना के शुभारंभ अवसर पर एक दिवसीय वर्चुअल सेमिनार का आयोजन किया गया। इस वर्चुअल सेमिनार की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह ने की, जबकि भारत सरकार के कृषि एवं उद्यान आयुक्त डॉ. एस.के. मल्होत्रा बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जिससे किसानों की आमदनी में बढ़ोतरी होगी। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि देश में लगभग 1.25 लाख मीट्रिक टन शहद का उत्पादन किया जा रहा है। जबकि 67 हजार 500 मीट्रिक टन शहद का निर्यात किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड भारत सरकार द्वारा देश के 17 केंद्रों पर मधुमक्खी पालन परियोजना संचालित है। जबकि मधुमक्खी की गुणवत्ता परखने हेतु 100 मिनी परीक्षण प्रयोगशाला भी सुचारू रूप से चल रही हैं। डॉक्टर मल्होत्रा ने छात्र-छात्राओं को सुझाव दिए कि मधुमक्खी पालन पर शोध करें। जिससे शहद का उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी हो।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह ने कहा कि मध्य उत्तर प्रदेश में सरसों की खेती बड़े स्तर पर होती है। मधुमक्खी पालन व सरसों का समावेश होगा तो अवश्य ही सरसों के उत्पादन और शहद के उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। उन्होंने कहा कि शोध द्वारा पाया गया है कि मधुमक्खी के परागण क्रिया द्वारा सरसों में कि 43 प्रतिशत उत्पादन अधिक हुआ है। डॉ. सिंह ने कहा कि छात्र मधुमक्खी पालन पर शोध करेंगे तो अवश्य अपना उद्यम स्थापित कर सकेंगे। साथ ही परियोजना के माध्यम से मधुमक्खी पालकों को जागरूक किया जाएगा। इसके अतिरिक्त छात्रों से कहा, जैविक कीट नियंत्रण के लिए मित्र कीटों पर भी शोध करने की आवश्यकता है। तत्पश्चात कार्यक्रम के अंत में मधुमक्खियों को आकर्षित करने वाले पौधे जैसे जामुन, यूकेलिप्टस का माननीय कुलपति महोदय द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। कार्यक्रम में सभी अतिथियों का स्वागत कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वाई. पी. मलिक ने किया जबकि कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद डॉ. राम सिंह उमराव ने दिया। इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉक्टर धर्मराज सिंह, निदेशक शोध डॉक्टर एच. जी. प्रकाश सहित अन्य संकाय सदस्य एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक - 255
शनिवार, 10 जुलाई, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
लखनऊ, मेरठ, झांसी और देहरादून से प्रकाशित

दैनिक भास्कर

देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जिससे किसानों की आमदनी में बढ़ोतरी होगी

संवर्धन परियोजना पर एक दिवसीय सेमिनार का शुभारम्भ

राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड भारत सरकार द्वारा देश के 17 केंद्रों पर मधुमक्खी पालन परियोजना संचालित होती है

भास्कर न्यूज

कानपुर। मधुमक्खियों के अनुकूल पौधों का रोपण एवं संवर्धन परियोजना के शुभारंभ अवसर पर एक दिवसीय वर्चुअल सेमिनार का आयोजन किया गया। इस वर्चुअल सेमिनार की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह ने की जबकि भारत सरकार के कृषि एवं उद्यान आयुक्त डॉ एसके मल्होत्रा बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिससे किसानों की आमदनी में बढ़ोतरी होगी। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि देश में लगभग 1.25 लाख मैट्रिक टन शहद का उत्पादन किया जा रहा है। जबकि 67 हजार 500 मीट्रिक टन शहद का निर्यात किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड भारत सरकार द्वारा देश के 17 केंद्रों पर मधुमक्खी पालन परियोजना संचालित है। जबकि मधुमक्खी की गुणवत्ता परखने हेतु 100 मिनी परीक्षण प्रयोगशाला भी सुचारू रूप से चल रही है। डॉक्टर मल्होत्रा ने छात्र-छात्राओं को सुझाव दिए कि मधुमक्खी पालन पर शोध करें। जिससे शहद का उत्पादन एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी हो। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह ने कहा कि मध्य उत्तर प्रदेश में सरसों की खेती बड़े स्तर पर होती है। मधुमक्खी पालन व सरसों का समावेश होगा तो अवश्य ही सरसों के उत्पादन और शहद के उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। उन्होंने कहा कि शोध द्वारा पाया गया है कि मधुमक्खी के परागण क्रिया द्वारा सरसों में कि 43 प्रतिशत उत्पादन अधिक हुआ है। डॉ सिंह ने कहा कि छात्र मधुमक्खी पालन पर शोध करेंगे तो अवश्य अपना उद्यम स्थापित कर करेंगे। साथ ही परियोजना के माध्यम से मधुमक्खी पालकों को जागरूक किया जाएगा। इसके अतिरिक्त छात्रों से कहा की जैविक कीट नियंत्रण के लिए मित्र कीटो पर भी शोध करने की आवश्यकता है।

तत्पश्चात कार्यक्रम के अंत में मधुमक्खियों को आकर्षित करने वाले पौधे जैसे जामुन, यूकेलिप्टस का माननीय कुलपति महोदय द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। कार्यक्रम में सभी अतिथियों का स्वागत कीट विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ वाई पी मलिक ने किया जबकि कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद डॉ राम सिंह उमराव ने दिया। इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉक्टर धर्मराज सिंह, निदेशक शोध डॉक्टर एच जी प्रकाश सहित अन्य संकाय सदस्य एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।